सूरह फ़ुरक़ान

तम्हीदी कलिमात

सूरह अल नूर के इख्तताम के साथ ही मक्की-मदनी सूरतों का तीसरा ग्रुप ख़त्म हुआ। ये ग्रुप चौदह मक्की (सूरह युनुस से लेकर सूरतुल मोमिनून तक) और एक मदनी सूरत (सूरह अल नूर) पर मुश्तमिल था। अब सूरतुल फ़ुरक़ान से मक्की-मदनी सूरतों का चौथा ग्रुप शुरू हो रहा है। इस ग्रुप में सूरतुल फ़ुरक़ान ता सूरतुल सज्दा आठ मक्की सूरतें हैं, जबकि आख़िर में एक मदनी सूरत (सूरतुल अहज़ाब) है। गोया इन दोनों ग्रुप्स की तरतीब में यह खूबसूरत मुशाबिहत पाई जाती है कि इन दोनों के आख़िर में एक-एक मदनी सूरत है यानि सूरह अल नूर और सूरतुल अहज़ाब। मअनवी ऐतबार से इन दोनों मदनी सूरतों का आपस में जोड़े का ताल्लुक़ भी है।

सूरतुल फ़ुरक़ान से शुरू होने वाला यह ग्रुप मक्की-मदनी सूरतों की तक़सीम के हवाले से चौथा, जबकि सिर्फ़ मक्की सूरतों के ऐतबार से तीसरा ग्रुप है। इसकी वज़ाहत यूँ है कि पहले ग्रुप में सिर्फ़ सूरतुल फ़ातिहा मक्की सूरत है, जो असूली तौर पर मक्की और मदनी तक़सीम से बाला है। इस तरह मक्की सूरतों का पहला ग्रुप गोया सूरतुल अनआम से शुरू होता है और इस ग्रुप में सिर्फ़ दो मक्की सूरते हैं, यानि सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़। दूसरा ग्रुप सूरह युनुस से लेकर सूरतुल मोमिनून तक चौदह मक्की सूरतों पर मुश्तमिल है, जबकि सूरतुल फ़ुरक़ान से शुरू होने वाले इस तीसरे ग्रुप में सूरतुल सज्दा तक आठ मक्की सूरतें हैं। इनमें से पहली सूरत यानि सूरतुल फ़ुरक़ान के अलावा बाक़ी सब का आग़ाज़ हुरूफ़-ए-मुक़त्तआत से होता है। सूरह अल शौरा और सूरतुल क़सस का आग़ाज़ طٰسٓمٓ से होता है, जबकि इनके दरमियान में सूरतुल नम्ल है जो طٰسٓ से शुरू होती है। बाक़ी चारों सूरतें (सूरतुल अनकबूत, सूरतुर्रूम, सूरह लुक़मान और सूरतुल सज्दा) الٓمٓ से शुरू होती हैं। यहाँ एक क़ाबिले ज़िक्र बात यह भी है कि सूरतुल फ़ुरक़ान से शुरू होने वाली मक्की सूरतें अगरचे मुख्तलिफ़ ग्रुप्स में तक़सीम हैं, लेकिन इन सबका मरकज़ी मज़मून तौहीद है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 9 तक

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰي عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ
وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ﴿۲﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا
وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ﴿۳﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ﴿۴﴾ۙ وَقَالُوْٓا
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۵﴾ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۶﴾
وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ﴿۷﴾ اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ
يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿۸﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۹﴾

आयत 1

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰي عَبْدِهٖ

"बड़ी बा-बरकत है वह हस्ती जिसने फ़ुरक़ान नाज़िल फ़रमाया अपने बन्दे पर"

ये तीसरी सूरत है जिसके मुतलअ (पहली आयत) में मौहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ का ज़िक्र "अब्द" की निस्बत से आया है। इस सिलसिले में पहली दो सूरतें सूरह बनी इसराईल और सूरतुल कहफ़ हैं। सूरह बनी इसराईल की पहली आयत में फ़रमाया है: {...سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ }। इसके बाद सूरतुल कहफ़ का आग़ाज़ इस तरह हुआ: {...اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰي عَبْدِهِ الْكِتٰبَ }।

"अल फ़ुरक़ान" से मुराद हक़ व बातिल में इम्तियाज़ कर देने वाली किताब यानि क़ुरान हकीम है।

لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۙ﴿۱﴾

"ताकि वह हो तमाम जहान वालों के लिये ख़बरदार करने वाला।"

यानि इस क़ुरान के ज़रिये से हुज़ूर ﷺ की रिसालत ता क़यामे क़यामत जारी व सारी रहेगी। जिस तक ये क़ुरान पहुँच गया, उस तक गोया आपका इन्ज़ार पहुँच गया। सूरतुल अनआम की आयत 19 में ये मज़मून इस तरह बयान हुआ है: {وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ} "और मेरी तरफ़ ये क़ुरान वही किया गया है ताकि मैं ख़बरदार कर दूँ तुम्हें इसके ज़रिये से और उसको भी जिस तक ये पहुँच जाए।" चुनाँचे आप ﷺ के इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद क़ुरान के पैग़ाम को फैलाना और इसके ज़रिये से इन्ज़ार के सिलसिले को ता क़यामे क़यामत तक जारी व सारी रखना उम्मत की ज़िम्मेदारी है।

आयत 2

اَلَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

"वह हस्ती जिसके लिये है बादशाही आसमानों की और ज़मीन की"

وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ

"और जिसने किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया, और ना ही उसका कोई शरीक है हुकूमत (के इख्तियारात) में"

وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ۝﴿۲﴾

"और उसी ने हर शय को पैदा किया और फिर उसके लिये एक अंदाज़ा मुक़र्रर किया।"

ये आयत अपने मज़मून के ऐतबार से सूरह बनी इसराईल की आख़री आयत से बहुत मुशाबेह है।

आयत 3

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ

"और इन्होंने उसके सिवा ऐसे मअबूद बना लिये हैं जो कुछ भी तख्लीक़ नहीं करते, बल्कि वह खुद मख्लूक़ हैं"

وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ۝٣

"और वह इख़्तियार नहीं रखते ख़ुद अपने बारे में भी किसी नुक़सान या नफ़ा का, और ना ही इन्हें इख़्तियार है मौत का, ना ज़िंदगी का और ना जी उठने का।"

आयत 4

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ افْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ

"और काफ़िर कहते हैं कि ये (क़ुरान) बस एक मनगढ़त चीज़ है, जिसको इस शख़्स ने ख़ुद गढ़ लिया है और इसकी मदद की है इस पर कुछ और लोगों ने।"

क़ुरान मजीद में फ़राहम करदा मालूमात और तफ़सीलात को देखते हुए मुशरिकीने मक्का ये समझते थे कि कोई भी अकेला आदमी ऐसा कलाम मुरत्तब नहीं कर सकता। चुनाँचे वह हुज़ूर ﷺ पर ये इल्ज़ाम लगाते थे कि आपके पीछे कुछ और लोग भी हैं जो ख़ुफ़िया तौर पर इस किताब की तसनीफ़ में आपकी मदद कर रहे हैं। गोया आपने इस काम के लिये एक इदारा-ए-तहरीर तशकील दे रखा है।

فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۝ۚ

"ये लोग ज़ुल्म और झूठ पर कमरबस्ता हो गए हैं।"

यानि ऐसी बातें करके ये लोग यक़ीनी तौर पर इफ़तरा और ज़ुल्म के मुरतकिब हो रहे हैं।

आयत 5

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا

"और कहते हैं कि ये पुराने लोगों के क़िस्से हैं जो इसने किसी से लिखवा लिये हैं"

क'तबा य्कतुबु: लिखना। इससे इकततबा बाब-ए-इफ़तआल है, यानि किसी से लिखवा लेना।

فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝۵

"फिर ये इमला कराई जाती हैं इसको सुबह व शाम।"

इनके पीछे ख़ुफ़िया तौर पर जो लोग ये क़िस्से-कहानियाँ गढ़ रहे हैं वो सुबह-शाम इनसे मिलते हैं और अपनी गढ़ी हुई बातें इन्हें लिखवा देते हैं। फिर वही बातें ये हमें सुना कर धौंस जमाते हैं कि मुझ पर वही आई है।

आयत 6

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

"आप कह दीजिये कि इसको उसने नाज़िल किया है जो आसमानों और ज़मीन की हर छुपी हुई चीज़ को जानता है।"

"यक़ीनन वह बहुत बख्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।"

اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

आयत 7

"और वो कहते हैं ये कैसा रसूल है जो खाना भी खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता भी है!"

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ

कि एक ऐसा शख्स अल्लाह का भेजा हुआ रसूल कैसे हो सकता है जिसको खाने की हाजत भी हो और वह आम इन्सानों की तरह बाज़ारों में ख़रीद व फ़रोख्त भी करता फिरता हो।

"क्यों नहीं उतारा गया इस पर कोई फ़रिश्ता कि वह इसके साथ होकर डराने वाला होता?"

لَوْلَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝

हाँ अगर ये वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं तो इन पर आसमान से कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया जो हमारी आँखों के सामने परवाज़ करते हुए नाज़िल होता, इनके रसूल होने की गवाही देता और फिर ये जिधर भी जाते, वह फ़रिश्ता लोगों को ख़बरदार करने के लिये हटो-बचो का नारा लगाते हुए इनके साथ-साथ चलता और ना मानने वालों को धमकाता!

आयत 8

"या उतारा जाता इस पर कोई ख़ज़ाना या इसके लिये कोई बाग़ होता, जिसमें से ये खाता-पीता।"

اَوْ يُلْقٰٓى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ۭ

और कुछ नहीं तो इनके लिये ज़र व जवाहर का कोई ख़ज़ाना ही उतार दिया जाता, या फिर मौज्ज़ाना तौर पर इस "वादी ग़ैर ज़ी ज़रअ" में फ़लों से लदा हुआ एक बाग़ ही इनके लिये वजूद में आ जाता और ये उस बाग़ के फ़ल खाते हुए हमें नज़र आते। उस बाग़ से ये बा-फ़रागत रोज़ी हासिल करते। ये मुशरिकीने मक्का का वही ऐतराज़ है जिसका ज़िक्र इससे पहले सूरह बनी इसराईल में भी आ चुका है।

"और इन ज़ालिमों ने तो ये तक कहा कि तुम लोग सिर्फ़ एक सहरज़दा शख्स की पैरवी कर रहे हो।"

وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝

कि ये जो कहते हैं कि मुझ पर फ़रिश्ता नाज़िल होता है इनके इस दावे में कोई सच्चाई नहीं। ये सब जादू और असीब का असर है।

आयत 9

انْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝

"देखिये! ये आपके लिये कैसी-कैसी मिसालें बयान कर रहे हैं, तो ये लोग गुमराह हो गए हैं, अब ये सीधे रास्ते पर नहीं आ सकते।"

ये लोग एक ज़िद पर अड़ गए हैं, लिहाज़ा अब इनके राहेरास्त पर आने का कोई इम्कान नहीं। इन अल्फ़ाज़ को पढ़ते हुए ये भी मालूम रहना चाहिये कि ये सूरत मक्की दौर के दरमियानी चार सालों में नाज़िल होने वाली सूरतों में से है। मक्की सूरतों की तरतीबे नुज़ूली और तरतीबे मुसहफ़ के बारे में पहले भी बताया जा चुका है कि मक्की दौर के इब्तदाई चार साल के दौरान में नाज़िल होने वाली सूरतें मुसहफ़ की तरतीब में सातवें यानि आख़री मंज़िल में शामिल की गई हैं। (आखरी मंज़िल में कुछ मदनी सूरतें भी शामिल हैं और इस ऐतबार से इस मंज़िल की मक्की मदनी सूरतों को दो ग्रुप्स में तक़सीम किया गया है।) आखरी चार साल में नाज़िलशुदा सूरतों को मुसहफ़ के पहले हिस्से में रखा गया है। इनमें सूरतुल अनआम, सूरतुल आराफ़, और सूरह युनुस से लेकर सूरतुल मोमिनून तक कुल सौलह सूरतें शामिल हैं। अलबत्ता ज़ेरे मुताअला सूरत यानि सूरतुल फ़ुरक़ान से शुरू होने वाले ग्रुप और इसके बाद वाले ग्रुप की सूरतें मक्की दौर के दरमियानी चार सालों में नाज़िल हुई हैं और मुसहफ़ के अंदर भी इन्हें दरमियान में रखा गया है।

आयात 10 से 20 तक

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَاۗءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝10 بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۣ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۚ ۝11 اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝12 وَاِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۭ ۝13 لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ۝14 قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ۝15 لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۗءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰي رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ۝16 وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۗءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ۝17 قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ۝18 فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝19 وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝20

आयत 10

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَاۗءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ

"बड़ी ही बा-बरकत है वह हस्ती जो अगर चाहे तो आपके लिये इनसे कहीं बेहतर चीज़ें बना दे"

ये लोग तो आप ﷺ पर ऐतराज़ करते हुए अपनी तरफ़ से बड़ी दूर की कौड़ी लाते हैं और अपने फ़हम व शऊर के मुताबिक़ मुख्तलिफ़ चीज़ों के नाम गिनवाते हैं कि आपको फ़लाँ असाइश मयस्सर होनी चाहिये और फ़लाँ चीज़ आपके तसर्रुफ़ में होनी चाहिये। इन बेचारों को हमारी क़ुदरत का अंदाज़ा ही नहीं। हम अगर चाहें तो इनकी तजवीज़ करदा चीज़ों से कहीं बेहतर ऐसी चीज़ें आपके लिये पैदा कर दें जो इनके हाशिया-ए-ख्याल में भी ना हों।

جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝10

"ऐसे बाग़ात जिनके नीचे नहरें बहती हों और आपके लिये महलात तामीर कर दें।"

ये लोग तो एक बाग़ की बात कर रहे हैं। हम आपके लिये बाग़ात के अनगिनत सिलसिले और बेशुमार महलात बना सकते हैं।

आयत 11

"असल बात ये है कि इन लोगों ने क़यामत को झुठला दिया है, और जो क़यामत को झुठलाता है उसके लिये हमने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।"

بَلۡ كَذَّبُوۡا بِالسَّاعَةِ ۟ وَاَعۡتَدۡنَا لِمَنۡ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيۡرًا ۚ﴿11﴾

आयत 12

"वह जब दूर से इनको देखेगी तो वह सुनेंगे उसके जोश और उसकी फुंकार को।"

اِذَا رَاَتۡهُمۡ مِّنۡ مَّكَانٍۢ بَعِيۡدٍ سَمِعُوۡا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيۡرًا ؕ﴿12﴾

जहन्नम जब दूर से ही ऐसे मुजरिमों की सूरत में अपने शिकार को आते देखेगी तो गज़बनाक होकर जोश मारेगी और उसके दहाड़ने और फुँकारने की ख़ौफ़नाक आवाज़ों को मुज़रिम लोग बहुत दूर से सुन सकेंगे।

आयत 13

"और जब वो फेंक दिये जायेंगे उसकी एक तंग जगह में ज़ंजीरों में जकडे हुए, तो उस वक़्त वो मौत को पुकारेंगे।"

وَاِذَاۤ اُلۡقُوۡا مِنۡهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيۡنَ دَعَوۡا هُنَالِكَ ثُبُوۡرًا ۟﴿13﴾

उस वक़्त वो दुआ करेंगे कि उन्हें मौत आ जाए। शऊर की ज़िन्दगी का क़िस्सा तमाम हो और उन्हें नस्यम मन्सिया कर दिया जाए।

आयत 14

"(तब इनसे कहा जाएगा कि) आज एक ही मौत को ना पुकारो बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो!"

لَا تَدۡعُوا الۡيَوۡمَ ثُبُوۡرًا وَّاحِدًا وَّادۡعُوۡا ثُبُوۡرًا كَثِيۡرًا ؕ﴿14﴾

अब तुम मौत को पुकारते रहो, उसके लिये मुसलसल दुआएँ माँगते रहो, मगर तुम्हारी इन दुआओं से तुम्हें मौत आएगी नहीं। अब तो तुम्हें मुसलसल ज़िन्दा रहना और अज़ाब की तकलीफ़ को झेलना होगा। इस अज़ाब की शिद्दत में ना तो कोई तख़्फ़ीफ़ की जाएगी और ना ही मौत आकर तुम्हें इससे छुटकारा दिलाएगी।

आयत 15

"आप कहिये कि क्या ये अंजाम बेहतर है या हमेशा रहने की वह जन्नत जिसका वादा किया गया है मुत्तक़ी बन्दों से?"

قُلۡ اَذٰلِكَ خَيۡرٌ اَمۡ جَنَّةُ الۡخُلۡدِ الَّتِىۡ وُعِدَ الۡمُتَّقُوۡنَ ؕ

كَانَتْ لَهُمْ جَزَاۗءً وَّمَصِيْرًا ــ15

"उनके लिये वह होगी बदला और उनके लौटने की जगह।"

वह उनके आमाल का बदला और उनके सफ़र की आख़री मंज़िल होगी।

आयत 16

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَاۗءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ۭ

"उनके लिये उसमें हर वह शय होगी जो वह चाहेंगे, वह उसमें रहेंगे हमेशा-हमेश।"

كَانَ عَلٰي رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ــ16

"ये आपके रब के ज़िम्मे एक वाजिबुल अदा वादा है।"

इस वादे के ऐफ़ा की आपके रब पर हत्मी ज़िम्मेदारी है। इसके हवाले से सूरह आले इमरान (आयत न० 194) की ये दुआ भी ज़हन में ताज़ा कर लीजिये: {رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰي رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ} "ऐ हमारे परवरदिगार! तूने अपने रसूलों के ज़रिये हमसे जो वादे किये हैं वह पूरे फ़रमा और हमें क़यामत के दिन रुसवा ना करना, बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।" अल्लाह तआला यक़ीनन अपने इन वादों को पूरा फ़रमाएगा और ये उसकी बेपायाँ रहमत का इज़हार है कि वह इन वादों को अपनी ज़िम्मेदारी क़रार देता है।

आयत 17

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

"और जिस दिन वह इनको और जिनको ये लोग अल्लाह के सिवा पूजते हैं इन सबको जमा करेगा"

जिन-जिन हस्तियों के नामों पर मुशरिकीन ने बुत बना रखे थे या जिनको वह बराहेरास्त अल्लाह का शरीक ठहराते थे, चाहे वह फ़रिश्ते हों, औलिया अल्लाह हों या अम्बिया हों, अल्लाह तआला इन सबको जमा करेगा:

فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَاۗءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ــ17

"और फ़रमाएगा: क्या मेरे इन बन्दों को तुमने गुमराह किया था? या वह खुद ही रास्ते से भटक गए थे?"

आयत 18

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَاۗءَ

"वह कहेंगे: तू पाक है, हमारे लिये तो ये रवा ही नहीं था कि हम तेरे सिवा किसी को अपना वली बनाते"

अल्लाह और अहले ईमान के दरमियान विलायत बाहमी का मज़बूत रिश्ता क़ायम है। अल्लाह अहले ईमान का वली है और अहले ईमान अल्लाह के वली हैं। सूरतुल बक़रह की आयत 257 में इस रिश्ते का ज़िक्र यूँ फ़रमाया गया: {اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ} "अल्लाह वली है मोमिनीन का, वह उन्हें

अंधेरों से निकालता है नूर की तरफ़।" सूरह युनुस में अल्लाह तआला अपने औलिया का ज़िक्र इस तरह करते हैं: {اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ} (आयत 62) "आगाह रहो! यक़ीनन जो अल्लाह के वली हैं ना उन्हें कोई खौफ़ है और ना ही वह ग़मगीन होंगे।" चुनाँचे अगर वह सच्चे मअबूद होते तो ज़रूर अपने बन्दों के साथ विलायत का रिश्ता क़ायम किये होते, लेकिन वह तो पूछने पर साफ़ इन्कार कर देंगे और कहेंगे कि हमारा वली तो अल्लाह है। हम अल्लाह के सिवा किसी और के साथ विलायत का रिश्ता कैसे अस्तवार कर सकते थे!

"लेकिन (ऐ परवरदिगार!) तूने इन्हें और इनके आबा व अजदाद को दुनिया का साज़ो सामान दिया'

وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ

इनको दुनिया में माल व दौलत और हैसियत व वजाहत से बहरामंद किया और पुश्त दर पुश्त खुशहाली और फ़ारिगुल बाली अता किये रखी।

"यहाँ तक कि वह याद दिहानी को भूल गए। और ये तबाह होने वाले लोग थे।"

حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًۢا بُوْرًا ــ18

इसके बाद अल्लाह तआला इन मुशरिकीन को ख़िताब करके फ़रमाएंगे:

आयत 19

"तो इन्होंने झुठला दिया तुम्हारी इन बातों को"

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ

कि जिन हस्तियों को तुम लोग अपने मअबूद और वली मानते थे इन्होंने तो तुम्हारे दावों को रद्द कर दिया।

"तो अब ना तुम्हारे बस में है (अज़ाब को) लौटाना और ना ही कोई मदद।"

فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ

"और जो कोई तुम में से ज़ुल्म का मुरतकिब हुआ है हम उसे चखाएंगे अब बहुत बड़ा अज़ाब।"

وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ــ19

आयत 20

"और आपसे पहले हमने जितने भी रसूल भेजे वह सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते भी थे।"

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ۭ

"और हमने तुम्हारे बाज़ को बाज़ के लिये आज़माइश बनाया है।"

وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ

وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۭ

"(ऐ मुसलमानों!) क्या तुम सब्र करते हो?
और आपका रब सब कुछ देखने वाला है।"

इस मसलिहत को समझ लेने के बाद अब तुम्हारे लिये सब्र व इस्तक़ामत की रविश नागुज़ीर है।

आयात 21 से 34 तक

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰۗىِٕكَةُ اَوْ نَرٰي رَبَّنَا ۭ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ــ21 يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰۗىِٕكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَىِٕذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ــ22 وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَاۗءً مَّنْثُوْرًا ــ23 اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَىِٕذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ــ24 وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاۗءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰۗىِٕكَةُ تَنْزِيْلًا ــ25 اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذِۨ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ وَكَانَ يَوْمًا عَلَي الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ــ26 وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰي يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ــ27 يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ــ28 لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَاۗءَنِيْ ۭ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ــ29 وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ــ30 وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ــ31 وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۭ كَذٰلِكَ ۣ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ــ32 وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ۭ ــ33 اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰي وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ۧــ34

आयत 21

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاۗءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰۗىِٕكَةُ

"और कहते हैं वो लोग जो हमारी मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं हैं कि क्यों नहीं उतारे जाते हम पर फ़रिश्ते?"

اَوْ نَرٰي رَبَّنَا ۭ

"या हम खुद अपने रब को देखें!"

अल्लाह के हुज़ूर हाज़री पर ईमान ना होने की वजह से इन लोगों की तबीयतों में सरकशी और लापरवाही पाई जाती है। चुनाँचे ईमान की दावत क़ुबूल करने के बजाय जवाब में वह तरह-तरह की बातें बनाते हैं। मसलन ये कि अगर अल्लाह ने हमें कोई पैग़ाम भेजना ही था तो अपने फ़रिश्तों के ज़रिये भिजवाता या खुद हमारे सामने आ जाता और हम अपनी आँखों से उसे देख लेते। या यह कि अल्लाह की तरफ़ से हमें कोई ऐसा मौज्ज़ा दिखाया जाता जिससे हम पर वाज़ेह हो जाता कि मोहम्मद (ﷺ) वाक़ई अल्लाह के रसूल हैं। इनके ऐसे मुतालबात का ज़िक्र मक्की सूरतों में बार-बार किया गया है।

لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ــ21

"उन्होंने अपने आप में बहुत ज़्यादा तकब्बुर किया है और वो बहुत बड़ी सरकशी में मुरतकिब हुए हैं।"

उनके ये मुतालबात उनके इस्तकबार का सबूत और उनकी सरकशी की दलील हैं। गोया वो खुद को इस लायक़ समझते हैं कि उन पर फ़रिश्तों का नुज़ूल हो और अल्लाह खुद उनके रू-ब-रू उनसे हमकलाम हो।

आयत 22

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰۗىِٕكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَىِٕذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ

"जिस दिन वह फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन मुजरिमों के लिये कोई अच्छी ख़बर नहीं होगी"

जिस दिन उन्हें फ़रिश्ते नज़र आएँगे वह दरअसल क़यामत का दिन होगा। उस दिन अल्लाह तआला भी नुज़ूल फ़रमाएगा और गैब के सारे परदे भी उठा दिये जाएँगे। वह दिन मुजरिमों के लिये कड़े एहतेसाब का दिन होगा। तब

उनके लिये तौबा का दरवाज़ा बंद हो चुका होगा और उन्हें कहीं से भी कोई अच्छी ख़बर नहीं मिल पाएगी।

وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ــ22

"और वो कहेंगे कि कोई रोक हाइल हो जाए।"

उस वक़्त वो दुहाई दे रहे होंगे कि किसी तरह से उन्हें बचाया जाए और क़यामत के अज़ाब को उन पर मुसल्लत होने से रोका जाए। काश, उनके और उस अज़ाब के माबैन कोई रुकावट हाइल हो जाए!

आयत 23

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ــ23

"और हम आगे बढ़ेंगे इनके हर अमल की तरफ़ जो इन्होंने किया होगा और कर देंगे उसे उडता हुआ गुब्बार।"

ये बहुत इबरतनाक मंज़र की तस्वीर है। ये दरअसल ऐसी नेकियों का ज़िक्र है जिनकी बुनियाद ईमाने हक़ीक़ी पर नहीं रखी गई थी। आखिरत ऐसे आमाल की हैसियत अल्लाह तआला के सामने किसी फ़ुज़ूल और क़ाबिले हकारत चीज़ की सी होगी जिसे कोई देखते ही फ़ुटबाल की तरह ठोकर मार कर हवा में उछाल दे। ये उन दुनिया परस्त और रियाकार लोगों के अंजाम का नक़्शा है जो ज़ाहिर की नेकियों के अंबार लेकर मैदाने महशर में आएँगे। दुनिया में इन्होंने खैरातें बांटी थीं, यतीमखाने खोले थे, अस्पताल बनाए थे, मस्जिदें तामीर कराई थीं, मदारिस की सरपरस्ती की थी, हज व उमरे किये थे, मगर इन आमाल को सरअंजाम देते हुए अल्लाह की रज़ाजोई और आख़िरत के अज्र व सवाब को कहीं भी मद्देनज़र नहीं रखा गया था। कहीं इज़्ज़त व शोहरत हासिल करने का जज़्बा नेकी का मुहर्रिक बना था तो कहीं पारसाई व परहेज़गारी का सिक्का जमाने की ख्वाहिश ने इबादात का मामूल अपनाया था। कभी इलेक्शन जीतने की मंसूबाबंदी ने खिदमते खल्क़ का लिबादा ओढ़ा था तो कभी कारोबारी साख को बेहतर बनाने के लालच ने मुत्तक़ियाना रूप धारा था। गर्ज़ हर नेकी के पीछे कोई ना कोई दुनियवी मफ़ाद कार फ़रमा था। लेकिन अल्लाह तआला जो अलीमुन बि-ज़ातिस्सुदूर है, उसके नज़दीक ऐसी किसी नेकी की कोई अहमियत और वक़अत नहीं। चुनाँचे ऐसे बदक़िस्मत लोगों की नेकियों के अंबार और आमाल-ए-सालेह के पहाड़ जब अल्लाह के हुज़ूर पेश होंगे तो उन्हें गर्द व गुब्बार के ज़र्रात की तरह तहलील कर दिया जाएगा।

ये मज़मून यहाँ तीसरी बार आया है। सूरह इब्राहीम में एक तम्सील के ज़रिये ऐसे आमाल की बे-बज़ाअती को इस तरह बयान किया गया है:

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ِۨاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ۭ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰي شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ــ18

"मिसाल उन लोगों की जिन्होंने कुफ़्र किया अपने रब के साथ (ऐसी है) कि उनके आमाल हों राख की मानिंद, जिस पर ज़ोरदार हवा चले आँधी के दिन। उन्हें कुछ क़ुदरत नहीं होगी उन (आमाल) में से किसी पर भी जो उन्होंने कमाए होंगे। यही तो है दूर की गुमराही।" फिर सूरह अल नूर में बगैर ईमान की नेकियों की हक़ीक़त एक दूसरी तम्सील में यूँ वाज़ेह की गई है:

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَاۗءً ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـــًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۭ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ ــ39

"और जो काफ़िर हैं उनके आमाल ऐसे हैं जैसे सराब किसी चटियल मैदान में, प्यासा उसे पानी समझता है, यहाँ तक कि वह उसके पास आया तो उसने उसे कुछ ना पाया, अलबत्ता उसने उसके पास अल्लाह को पाया, तो उसने पूरा-पूरा चुका दिया उसे उसका हिसाब। और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।"

आयत 24

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَىِٕذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ـــ24

"जन्नत वाले उस रोज़ बहुत अच्छे ठिकानों में होंगे और उनके क़ैलुला करने की जगह भी बहुत ही अच्छी होगी।"

आयत 25

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاۗءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰۗىِٕكَةُ تَنْزِيْلًا ـــ25

"और जिस दिन आसमान बादल के साथ फट जाएगा और फ़रिश्ते नाज़िल किए जायेंगे फ़ौज दर फ़ौज।"

आयत 26

اَلْمُلْكُ يَوْمَىِٕذِۨ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ

"उस दिन हक़ीक़ी बादशाही सिर्फ़ रहमान की होगी।"

बादशाही और हुक्मरानी तो आज भी अल्लाह ही की है, लेकिन दुनिया में अल्लाह तआला ने इंसानों की आज़माइश के लिये हक़ीक़त को मुख्तलिफ़ परदों में छुपा रखा है। आज ब-ज़ाहिर कई साहिबाने इख़्तियार व इक़तदार नज़र आते हैं, लेकिन उस दिन हर तरह का इख़्तियार सिर्फ़ उस बादशाहे हक़ीक़ी के पास ही होगा।

وَكَانَ يَوْمًا عَلَي الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ـــ26

"और वह दिन काफ़िरों पर बहुत कठिन होगा।"

आयत 27

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰي يَدَيْهِ

"और जिस दिन ज़ालिम (हसरत से) अपने हाथों को काटेगा"

عَضَّ يَعُضُّ के मायने दाँतों से पकड़ना या काटने के हैं। सूरह नूर की आयत 55 के ज़िमन में जो हदीस बयान हुई है उसमें مُلْكًا عَاضًّا का लफ्ज़ इसी माद्दे से मुश्तक़ है, यानि काट खाने वाली मलूकियत। उस दिन हर गुनाहगार और मुजरिम शख्स हसरत व्यास की तस्वीर बना झुंझलाहट और पछतावे में अपने हाथों को अपने दाँतों से काटेगा।

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ـــ27

"कहेगा: काश! मैंने रसूल के साथ रास्ता इख़्तियार किया होता!"

हसरत से कहेगा कि काश मैंने रसूल का साथ दिया होता, उनका इत्तेबाअ किया होता। उनके साथियों में शामिल हो गया होता!

आयत 28

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ـــ28

"हाय मेरी शामत! काश मैंने फ़लाँ शख़्स को दोस्त ना बनाया होता!"

कि मेरी ज़िन्दगी में एक मरहला ऐसा भी आया था कि मेरे दिल पर रसूल अल्लाह ﷺ की दावत की सच्चाई मुन्कशिफ़ होना शुरू हो गई थी, लेकिन मेरे फ़लाँ दोस्त ने मुझे वरगला कर फिर इस रास्ते से भटका दिया। काश मैंने ऐसे शख़्स की दोस्ती इख़्तियार ना की होती!

आयत 29

لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ۭ

"उसने मुझे गुमराह करके 'ज़िक्र' से बरगश्ता कर दिया इसके बाद जबकि वह मेरे पास पहुँच गया था।"

ज़िक्र के पहुँच जाने से मुराद एक तो यह है कि मुझे अल्लाह के रसूल ﷺ ने पूरी बात सुना दी थी और दूसरे ये कि मेरी ज़िन्दगी के फ़लाँ लम्हे में पैगामे हक़ मेरे दिल के तारों को छेड़ने लगा था और उसकी हक्क़ानियत मेरे दिल की गहराईयों में उतरने लगी थी। जैसे सूरतुन्निसा (आयत 63) में फ़रमाया गया: {وَقُلْ لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًۢا بَلِيْغًا} कि ऐ नबी ﷺ! इनसे ऐसी बात कहिये जो इनकी रूह की गहराइयों में उतर जाए। चुनाँचे मज़कूरा शख़्स अपनी ऐसी ही कैफ़ियत का ऐतराफ़ करेगा कि इस नसीहत, याद दिहानी और हिदायत का इब्लाग मेरे दिल तक हो चुका था, लेकिन अफ़सोस कि मेरे साथी ने मुझे फिर से गुमराह कर दिया।

وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ـــ29

"और शैतान तो इंसान को आख़िर दगा देने वाला है।"

शैतान इंसान के साथ बड़ा ही बेवफ़ाई करने वाला और आख़िरकार उसे अकेला छोड़ जाने वाला है।

आयत 30

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ـــ30

"और रसूल ने कहा (या रसूल कहेगा): ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी क़ौम ने इस क़ुरान को छोड़ी हुई चीज़ बना दिया।"

तावीले ख़ास के मुताबिक़ हुज़ूर ﷺ की ये शिकायत क़ुरैशे मक्का के बारे में है कि ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने तेरा पैग़ाम इन तक पहुँचाने और इन्हें क़ुरान

सुनाने की हर इम्कानी कोशिश की है, लेकिन ये लोग किसी तरह इसे सुनने और समझने के लिये तैयार ही नहीं, जबकि इस आयत की तावीले आम ये है कि हुज़ूर ﷺ की ये शिकायत क़यामत के दिन अपनी उम्मत के उन अफ़राद के ख़िलाफ़ होगी जो इस "महजूरी" के मसादिक़ हैं, कि इन लोगों ने क़ुरान को लायक़-ए-अलतफात ही ना समझा। अल्लामा इक़बाल के इस मिसरे में इसी आयत की तल्मीह पाई जाती है: "ख्वार अज़ महजूरी क़ुरआँ शदी" कि ऐ मुस्लमान आज तू अगर ज़लील व ख़्वार है तो इसका सबब यही है कि तूने क़ुरान को छोड़ दिया है।

इस सिलसिले में एक बहुत अहम और क़ाबिले गौर नुक्ता ये भी है कि क़ुरैशे मक्का ने तो अपनी ख़ास ज़िद और ढिठाई में क़ुरान को इस मौक़फ़ के तहत तर्क किया था कि ये अल्लाह का कलाम है ही नहीं और मोहम्मद (ﷺ) ने खुद अपनी तरफ़ से इसे गढ़ लिया है। लेकिन आज अगर कोई शख्स कहे कि मैं क़ुरान पर ईमान रखता हूँ और इसे अल्लाह का कलाम मानता हूँ, मगर अमली तौर पर उसका रवैय्या ऐसा हो कि वह क़ुरान को लायक़-ए- ऐतनाअ ना समझे, न इसे पढ़ना सीखे, ना कभी इसके पैग़ाम को जानने की कोशिश करे तो गोया उसके हाल या अमल ने उसके ईमान के दावे की तकज़ीब कर दी। चुनाँचे इस आयत के हाशिये (तर्जुमा शैखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन रह.) में मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह. इस बारे में अपनी राय का इज़हार इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाते हैं: "आयत में अगरचे मज़कूर सिर्फ़ काफ़िरों का है ताहम क़ुरान की तस्दीक़ ना करना, इसमें तदब्बुर ना करना, उस पर अमल ना करना, उसकी तिलावत ना करना, उसकी तसहीह क़राअत की तरफ़ तवज्जो ना करना, उससे ऐराज़ करके दूसरी लग्वियात या हक़ीर चीज़ों की तरफ़ मुतवज्जा होना, ये सब सूरतें दर्जा-ब-दर्जा हिजराने क़ुरान के तहत में दाख़िल हो सकती हैं।"

मक़ामे गौर है कि आज अगर हम अपनी दुनिया सँवारने के लिये अंग्रेज़ी ज़बान में तो महारत हासिल कर लें, लकिन क़ुरान का मफ़हूम समझने के लिये अरबी ज़बान के बुनियादी क़वाएद सीखने के ज़रूरत तक महसूस ना करें, तो क़ुरान पर हमारे ईमान के दावे और इसको अल्लाह का कलाम मानने की अमली हैसियत क्या रह जाएगी? चुनाँचे हर मुसलमान के लिये लाज़िम है कि वह क़ुरान के हुक़ूक़ के बारे में आगाही हासिल करे, इस सिलसिले में अमली तक़ाज़ों को समझे और इन तक़ाज़ों पर अमल करने की हत्तल मक़दूर कोशिश करता रहे। इस मौज़ू पर मेरा एक निहायत जामेअ किताबचा "मुसलमानों पर क़ुरान मजीद के हुक़ूक़" दस्तयाब है। इसका इंग्लिश, अरबी, फ़ारसी और मलाया ज़बानों में तर्जुमा हो चुका है। क़ुरान के हुक़ूक़ का इदराक हासिल करने के लिये इस किताबचे का मुताअला इंशा अल्लाह बहुत मुफ़ीद साबित होगा।

आयत 31

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ

"और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन बना दिये मुजरिमों में से।"

ये मज़मून सूरतुल अनआम की आयत 112 में भी आ चुका है। अल्लाह तआला अहले ईमान की आज़माइश के लिये ज़रूरी समझते हैं कि उनकी मुखालफ़त की भट्टी ख़ूब गर्म हो, उनके ख़िलाफ़ कशमकश और तसादुम

का माहौल बने और बातिल के मुक़ाबले में उन्हें अमली तौर पर मैदाने कारज़ार में उतरना पड़े ताकि खरे और खोटे की पहचान हो और ईमान के सच्चे दावेदार निखर कर सामने आ जायें। वरना अगर ठंडी सड़क पर चहल क़दमी करते हुए जन्नत तक पहुँचना हो तो कोई भी इस सआदत में पीछे नहीं रहेगा। हुज़ूर ﷺ का फ़रमान है: ((حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالْمَكَارِهِ))[16] यानि जहन्नम को इंसान के मरगूबाते नफ्स से ढाँप दिया गया है, जबकि जन्नत को ऐसी चीज़ों से ढाँप दिया गया है जो इंसान को नापसंद और नागवार है।

हक़ के रास्ते पर चलते हुए इंसान को तरह-तरह की तकलीफ़ें उठाना पडती है, मसाएब झेलने पड़ते हैं और कठिन आज़माइशों से गुज़रना पड़ता है। इस मज़मून को सूरतुल बक़रह, आयत 155 में इस तरह बयान किया गया है: { وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ } "और हम ज़रूर आजमाएँगे तुम्हें किसी क़दर खौफ़ से, भूख से और जान व माल और फ़सलों नुक़सान से।" मुसीबतों और आज़माइशों की इस छलनी के ज़रिये अल्लाह अपने उन बन्दों को छाँट कर अलग कर लेता है जो जन्नत की क़ीमत अदा करने के लिये तैयार हों और फिर उन लोगों से जन्नत का सौदा करता है: (सूरह तौबा:111) { إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ } "यक़ीनन अल्लाह ने ख़रीद ली हैं अहले ईमान से उनकी जानें भी और उनके माल भी इस क़ीमत पर कि उनके लिये जन्नत है।"

وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ـــ31

"और काफ़ी है आपका रब हिदायत देने वाला और मदद देने वाला।"

जो शख्स हिदायत का तलबगार हो उसे अल्लाह हिदायत भी देता है और फिर इस रास्ते पर चलाने के लिये उसकी मदद भी करता है।

आयत 32

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۚ

"और इन काफ़िरों ने ये भी कहा कि इस पर ये क़ुरान पूरे का पूरा एक ही दफ़ा क्यों ना उतार दिया गया?"

क़ुरैशे मक्का का क़ुरान पर एक ऐतराज़ ये भी था कि अगर वाक़ई ये अल्लाह का कलाम है तो फिर इकट्ठा एक साथ ही नाज़िल क्यों नही हो जाता? जैसे हज़रत मूसा अलै. को पूरी की पूरी तौरात तख्तियों पर लिखी हुई एक ही दफ़ा दे दी गई थी। क़ुरान को थोड़ा-थोड़ा पेश करने से मुशरिकीन को हुज़ूर ﷺ पर एक शायर का गुमान होता था, क्योंकि शायर लोग भी एक दम से अपना पूरा कलाम पेश नहीं कर सकते। वो एक-एक दो-दो गज़लें या नज़में लिखते रहते हैं और मुद्दत के बाद जाकर कहीं उनके दीवान मुकम्मल होते हैं।

كَذَٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ

"इस तरह (इसलिये नाज़िल किया गया है) ताकि इसके ज़रिये से हम आपका दिल मज़बूत करें"

इसको हम अच्छी तरह आपके ज़हन नशीन करते रहें और इस पर आपका दिल पूरी तरह ठुक जाए।

وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ــ32

"और (इसी लिये) हमने इसे तदरीज व अहतमाम के साथ तरतीब दिया है।"

क़ुरान को थोड़ा-थोड़ा नाज़िल करने में एक हिकमत ये भी थी के रसूल अल्लाह ﷺ और अहले ईमान को हर मौक़ा-महल के मुताबिक़ बर-वक़्त रहनुमाई मिलती रहे। इसके अलावा इसमें अहले ईमान के लिये तसल्ली और तस्कीन का पहलु भी था कि अल्लाह हमारे हालात को देख रहा है। मुश्किल हालात में साबक़ा क़ौमों के हालात पढ़ कर उनके दिलों को सहारा मिलता था कि जिस तरह अल्लाह ने हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह (अलै.) के साथियों की मदद की थी और उनके दुश्मनों को मलियामेट कर दिया था इसी तरह वह हमें भी कामयाब करेगा।

आयत 33

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ــ33

"और ये लोग आपके पास कोई भी ऐतराज़ नहीं लाएँगे मगर ये कि हम (उसके जवाब में) आपके पास हक़ और उसकी बेहतरीन वज़ाहत ले आएँगे।"

क़ुरान हकीम को जुज़्अन-जुज़्अन नाज़िल करने में एक मसलिहत ये भी है कि जब कभी भी मुखालफ़ीन और मौअतरज़ीन की तरफ़ से कोई ऐतराज़ या सवाल उठाया जाता है तो वही के ज़रिये उसका मब्नी बरहक़ और मुफ़स्सल जवाब आप ﷺ को बता दिया जाता है।

आयत 34

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ــ34

"ये वो लोग हैं जिन्हें जमा किया जाएगा जहन्नम की तरफ़ इनके मुँहों के बल, वह बहुत ही बुरे मक़ाम पर होंगे और बहुत भटके हुए होंगे सीधे रास्ते से।"

आयात 35 से 44 तक

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ــ35 فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ــ36 وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِـيْمًا ــ37 وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ــ38 وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ــ39 وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَي الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ــ40 وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ــ41 اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ــ42 اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ــ43 اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ۭ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ ۭ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ــ44

आयत 35

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿35﴾

"और हमने मूसा को किताब अता की थी और उसके साथ हमने उसके भाई हारून अलै. को वज़ीर बना दिया था।"

हज़रत मूसा अलै. की मदद और मआवनत के लिये हज़रत हारून अलै. को उनके मददगार के तौर पर रिसालत की ज़िम्मेदारी सौंप दी गई थी। वज़ीर "وِزر" (बोझ) से है, यानि ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने में मुअय्यन व मददगार।

आयत 36

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿36﴾

"तो हमने हुक्म दिया कि आप दोनों जाओ उस क़ौम की तरफ़ जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया। फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह व बर्बाद करके रख दिया।"

यानि हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै. को फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा गया और उन लोगों के मुसलसल इन्कार के बाइस बिल्आख़िर उन्हें समुद्र में गर्क़ करके नेस्तो नाबूद कर दिया गया।

आयत 37

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ

"और क़ौमे नूह को भी हमने गर्क़ कर दिया, जब उन्होंने रसूलों की तकज़ीब की और उन्हें हमने नौए इंसानी के लिये एक निशानी बना दिया।"

وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِـيْمًا ﴿37﴾

"और हमने ज़ालिमों के लिये एक दर्दनाक अज़ाब भी तैयार कर रखा है।"

यानि पैगम्बरों की तकज़ीब करने वाली इन क़ौमों को अज़ाबे इस्तेसाल की सूरत में नक़द सज़ा तो दुनिया ही में मिल गई थी मगर असल अज़ाब अभी इनका मुन्तज़िर है। यह अज़ाब इन्हें आख़िरत में मिलेगा और वह बेहद तकलीफ़ देह होगा।

आयत 38

وَّعَادًا وَّثَمُــوْدَا۟ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿38﴾

"और क़ौमे आद, क़ौमे समूद, कुएँ वालों और इनके माबैन बहुत सी दूसरी अक़्वाम (को भी हमने हलाक कर दिया)।"

"असहाबुल रस्स" के बारे में सराहत नहीं मिलती कि ये कौनसी क़ौम थी और इनका ज़माना और इलाक़ा कौनसा था। यूँ मालूम होता है कि इन्होंने

अपने पैग़म्बर को किसी कुएँ में बंद कर दिया था। इसलिये इन्हें कुएँ वाले कहा गया है।

आयत 39

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ۖ

"और इन सबके लिये हमने मिसालें बयान कीं"

अपने-अपने वक़्त पर इन सब क़ौमों को राहे हिदायत पर लाने के लिये इनके माहौल और हालात के मुताबिक़ हम ठोस दलाइल और वाज़ेह हक़ाइक़ पर मब्नी तालीमात इनके सामने पेश करते रहे।

وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ـــ39

"लेकिन (इनके इन्कार की पादाश में बिलआखिर) हमें इन सबको ग़ारत कर दिया।"

आयत 40

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۚ

"और ये लोग उस बस्ती पर से तो गुज़रते हैं जिस पर बहुत बुरी बारिश बरसाई गई थी।"

इससे सदुम और आमूराह की बस्तियाँ मुराद हैं जिनकी तरफ़ हज़रत लूत अलै. मबऊस हुए थे। बदतरीन बारिश से मुराद पत्थरों की बारिश है, जिसका ज़िक्र कुरान हकीम में कई जगह आया है।

أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنَهَا ۚ

"तो क्या ये लोग उसे देखते नहीं रहे?"

सफ़र-ए-शाम के दौरान आते-जाते क़ुरैश के तिजारती क़ाफिले जब इन बस्तियों के खंडरात के पास से गुज़रते हैं तो क्या ये लोग इन्हें निगाह-ए-इबरत से नहीं देखते?

بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ـــ40

"बल्कि वह उम्मीद नहीं रखते जी उठने की!"

असल बात ये है कि इन्हें बअसे बाद अल मौत पर यक़ीन नहीं है। यही सबब है कि ऐसे इबरत अंगेज़ हक़ाइक़ पर से ये लोग बगैर कोई सबक़ हासिल किये अंधों की तरह गुज़र जाते हैं।

आयत 41

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۚ

"और ये लोग जब भी आपको देखते हैं तो आपका मज़ाक़ बना लेते हैं।"

क़ुरैश मक्का के यहाँ हुज़ूर ﷺ की दावत की मुखालफ़त का यह भी एक तरिक़ा था कि वह बात सुनने के लिए कभी संजीदा ना होते और आपकी दावत को

हमेशा मज़ाक़ में उड़ा देते। ना वो आपकी बात को कभी संजीदगी से सुनते, ना कभी इस पर गौर करते और ना ही उसका कोई संजीदा जवाब देते।

أَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝41

"क्या ये हैं जिन्हें अल्लाह ने भेजा है रसूल बना कर!"

ये और इस तरह के दूसरे जुमलों के ज़रिये वह लोग आपका तमस्खुर उड़ाते थे।

आयत 42

إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ

"क़रीब था कि ये शख्स हमें अपने मअबूदों से वरगला देता, अगर हम उन (की परस्तिश) पर साबित क़दम ना रहते।"

अगर हमने अपने इन मअबूदों के साथ वफ़ादारी का रिश्ता इस्तवार ना कर रखा होता तो ये शख्स ज़रूर हमें इनसे बरगश्ता करके रास्ते से भटका देता।

وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيْلًا ۝42

"अनक़रीब जब वह अज़ाब को देखेंगे तो जान जाएँगे कि कौन भटका हुआ था रास्ते से।"

इन्हें बहुत जल्द ये हक़ीक़त मालूम हो जाएगी कि असल गुमराह कौन था? जिन्हें ये गुमराही का इल्ज़ाम देते हैं वह या ये खुद!

आयत 43

أَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۚ

"क्या तुमने देखा उस शख्स को जिसने अपनी ख्वाहिशे नफ्स को अपना मअबूद बना लिया है?"

यहाँ शिर्क की एक बहुत अहम क़िस्म बयान हुई है, जो हमें अपने गिरेबानों में झाँकने की दावत देती है। इस पर बड़े-बड़े मौवह्हिदीन को गौर करना चाहिये कि दरअसल शिर्क सिर्फ़ "या अली मदद!" का नारा लगाने या क़ब्र परस्ती तक ही महदूद नहीं है, बल्कि अल्लाह के किसी वाज़ेह हुक्म के मुक़ाबले में ख्वाहिशे नफ्स पर अमल पेरा होना भी शिर्क के ज़ुमरे में आता है। इंसान को उसका नफ्स हर वक़्त दुनिया समेटने और ज़्यादा से ज़्यादा माल व दौलत जमा करने के हसीन ख्व़ाब दिखाता है। वह हराम को अपनाने के लिये पुर कशिश तौजीहात पेश करता है। मसलन ये कि आज के बैंक का सूद हराम नहीं है, पुराने दौर में तो सूद को इसलिये हराम किया गया था कि उसके ज़रिये से गुरबाअ का इस्तेहसाल होता था, आज के बैंकिंग निज़ाम पर इसका इतलाक़ नहीं होता, आज तो बैंक की मआनवत के बैगर कोई कारोबार चल ही नहीं सकता, इसलिये बैंक के तआवुन से फलाँ कारोबार करने में कोई हर्ज नहीं। चुनाँचे अगर किसी शख्स ने अल्लाह के अहकाम को पसे-पुश्त डाल कर अपने नफ्स की बात मान ली तो गोया वह अपने नफ्स का बंदा बन गया। अब उसका नफ्स ही इसका "मताअ" है और जो कोई भी किसी का असल मताअ होगा वही उसका मअबूद होगा।

इबादत दरअसल मुकम्मल गुलामी का नाम है। जिस तरह एक गुलाम अपने आक़ा का हर हुक्म मानने का पाबंद है उसी तरह एक बन्दे (अब्द) पर भी लाज़िम है कि वह अपने मअबूद की मुकम्मल फ़रमाबरदारी करे और उसके किसी भी हुक्म से सरताबी ना करे। इबादत का ये मफ़हूम सूरतुल मोमिनून (आयत 47) में दर्ज फ़िरऔन के इस जुम्ले से और भी वाज़ेह हो जाता है: {وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ} कि इन दोनों (हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै.) की क़ौम हमारी गुलाम और इताअत शआर है। अब अगर कोई शख्स ज़बान से तौहीद परस्ती का दावा करे, ला इलाहा इल्लल्लाह के वज़ीफ़े करे और चिल्ले काटे, लेकिन अमलन इताअत और फ़रमाबरदारी अपने नफ्स की करे तो हक़ीक़त में वह तौहीद परस्त नहीं बल्कि नफ्स परस्त है और उसका नफ्स ही असल में उसका मअबूद है।

اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۙ﴿43﴾

"तो (ऐ नबी ﷺ!) क्या आप ऐसे शख्स की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं?"

आयत 44

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ

"या आपका ख्याल है कि इनमें से अक्सर सुनते और समझते हैं?"

ये लोग आपकी महफ़िल में कुछ सुनने और समझने के लिये नहीं आते बल्कि ये तो अपने अवाम को धोखा देने के लिये आते हैं ताकि वापस जाकर उन्हें बता सके कि हम तो बड़े अहतमाम के साथ गए थे कि मोहम्मद (ﷺ) की बातों को खुद सुनें और समझें लेकिन इनसे तो हमें कोई ख़ास बात सुनने को मिली ही नहीं।

اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿44﴾

"ये नहीं हैं मगर चौपायों की मानिंद, बल्कि उनसे बढ कर भटके हुए हैं।"

चौपाये तो किसी कलाम के मफ़हूम को समझने से इसलिये माज़ूर हैं कि उनको अल्लाह तआला ने इस सतह का शऊर ही नहीं दिया, लेकिन ये लोग इंसान होकर भी अक़्ल और शऊर से काम नहीं लेते। इस लिहाज़ से ये लोग चौपायों और जानवरों से भी गए गुज़रे हैं।

आयात 45 से 60 तक

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ﴿45﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿46﴾
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿47﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً طَهُوْرًا ۙ﴿48﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿49﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ
اِلَّا كُفُوْرًا ﴿50﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿51﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿52﴾ وَهُوَ الَّذِيْ
مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿53﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا
وَّصِهْرًا ۭ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿54﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۭ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰي رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿55﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿56﴾ قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿57﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَي الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ
وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَۨا ﴿58﴾ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ ۛ
الرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿59﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۤ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿60﴾ۛ

आयत 45

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ

"क्या तुमने देखा नहीं अपने रब (की क़ुदरत) की तरफ़ कि वह किस तरह साया फैला देता है?"

जब रात होती है तो यूँ लगता है जैसे पूरी ज़मीन पर एक स्याह चादर ओढ़ा दी गई है।

وَلَوْ شَاۗءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ

"और अगर वह चाहता तो इसको मुस्तक़िल ठहराए रखता।"

अगर अल्लाह तआला चाहता तो पूरी ज़मीन पर हमेशा रात ही रहती, दिन का उजाला कभी नामोदार ही ना होता। जैसे कि सूरतुल क़सस में फ़रमाया गया: {قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَاۗءٍ ۭ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ} "(ऐ नबी ﷺ!) इन लोगों से पूछिए: क्या तुमने गौर किया कि अगर अल्लाह रोज़े क़यामत तक हमेशा के लिये तुम पर रात तारी कर दे तो अल्लाह के सिवा कौनसा मअबूद है जो तुम्हें रौशनी ला दे? क्या तुम सुनते नहीं हो?"

ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ 45

"फिर हमने सूरज को इस पर रहनुमा बनाया।"

تُعْرَفُ الْاَشْيَاءُ بِاَضْدَادِهَا (चीज़ें अपनी मुखालिफ़ चीज़ों से पहचानी जाती हैं) के मसादिक़ सूरज के वजूद से ही हमें रौशनी और तारीकी का पता चलता है।

आयत 46

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا 46

"फिर हम उसको आहिस्ता-आहिस्ता अपनी तरफ़ समेट लेते हैं।"

जब सूरज तुलूअ होता है तो साये बहुत लम्बे होते हैं। फिर ज्यों-ज्यों सूरज ऊपर उठता है तो आहिस्ता-आहिस्ता सिमटना शुरू हो जाते हैं जैसे कोई उनकी तनाबें खींच रहा हो।

आयत 47

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا 47

"और वही है जिसने रात को बनाया तुम्हारे लिये ओढ़ना और नींद को आराम और दिन को बनाया उठ खड़े होने का वक़्त।"

रात को इंसानों के आराम करने के लिये मौज़ूं किया, और दिन के माहौल को उनके काम-काज करने के लिये साज़गार बनाया।

आयत 48

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ

"और वही है जो हवाओं को भेजता है अपनी रहमत के आगे-आगे बशारत बना कर।"

बादलों के आगे-आगे ठंडी हवाओं के झोंके गोया बाराने रहमत की नवीद सुनाते जाते हैं।

"और हमने आसमान से पाक पानी उतारा।" وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً طَهُوْرًا ۙ 48

बारिश का पानी पाक भी है और पाकी हासिल करने का ज़रिया भी। जब ये पानी बरसता है तो सबसे पहले फिज़ा की आलूदगी को साफ़ करता है। फ़िर ज़मीन की बहुत सी आलूदगियों को समुन्दर में बहा ले जाता है। समुन्दर के पानी से बुखारात की सूरत में बिल्कुल साफ़ और हर आलूदगी से पाक पानी फ़िर से फिज़ा में पहुँच कर बादल की शक्ल इख़्तियार कर लेता है और इस तरह ये सिलसिला (cycle) चलता रहता है।

आयत 49

"ताकि हम ज़िन्दा करें इसके ज़रिये से मुर्दा ज़मीन को और इससे हम सैराब करते हैं अपनी मख्लूक़ में से बहुत से चौपायों और इन्सानों को।" لِّنُحْيِۦ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا 49

जहाँ ये पानी बहुत सी आलूदगियों को साफ़ करता है वहाँ ये जानवरों और इंसानों के पीने के काम भी आता है। मेडिकल साइंस की नज़र से देखा जाए तो इंसानी या हैवानी जिस्म के अन्दर इस्तेमाल होकर पानी कहीं ख़त्म (consume) नहीं हो जाता बल्कि यहाँ भी वह जिस्म के अन्दरूनी निज़ाम को चलाने और उसकी सफ़ाई करने का काम करता है। पानी के ज़रिये से ही जिस्म के अन्दर खून की गर्दिश (circulation) मुम्किन होती है और metabolism के नतीजे में पैदा होने वाले फ़ाज़िल और नुक़सान देह फज़लात का माद्दे, गुर्दों, फेफड़ों वगैरह से इखराज मुम्किन होता है।

आयत 50

"और इसको हमने गर्दिश में रखा हुआ है इनके माबैन ताकि लोग इससे नसीहत हासिल करें" وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ڮ

समुन्दर के बुखारात से बादलों का बनना, अरबों टन पानी का हवाओं के दोश पर हज़ारों मीलों के फासले तय करके मुख्तलिफ़ इलाक़ों में बारिश बरसाना, इन बारिशों से नदी-नालों और दरियाओं के सिलसिलों का जन्म लेना, इंसानी आबादियों से मीलों की बुलंदियों पर ग्लैशियर्ज़ की सूरत में पानी के कभी ना ख़त्म होने वाले ज़खाइर (over head tanks) का वजूद में आना, फ़िर ग्लैशियर्ज़ का पिघल-पिघल कर एक तसलसुल के साथ इंसानी ज़रूरतों की सैराबी का ज़रिया बनना, और इस सब कुछ के बाद फालतू पानी का फ़िर से समुन्दर में पहुँच जाना! ये है पानी की गर्दिश (water cycle) का अज़ीमुश्शान निज़ाम जो क़ुदरत के बड़े-बड़े अजाइबात में से है और ज़बाने हाल से इंसानी अक़्ल व शऊर को दावते फ़िक्र देता है कि वह इसके खालिक़ को पहचाने और उस पर ईमान लाए।

"लेकिन अक्सर लोग कुफ़राने नेअमत ही करते हैं।"

فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ـــ50

इस सबके बावजूद अक्सर लोग नाशुक्री पर ही अड़े हुए हैं और इसके सिवा कोई दूसरा तर्ज़े अमल इख़्तियार करने से इन्कारी हैं।

आयत 51

"और अगर हम चाहते तो हम हर बस्ती में एक नज़ीर भेज देते।"

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝51ۙ

अगरचे अल्लाह तआला हर बस्ती में भी पैग़म्बर भेज सकते थे, लेकिन आम तौर पर एक क़ौम की तरफ़ एक पैग़म्बर ही मबऊस किया जाता रहा है। जैसा कि सूरतुल रअद (आयत 7) में फ़रमाया गया: {وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ} कि हर क़ौम की तरफ़ एक पैग़म्बर भेजा गया। और ये पैग़म्बर हमेशा ऐसे शहर में मबऊस किया जाता था जो मुतालक़ा क़ौम या इलाक़े के सक़ाफ़ती, इल्मी, तहज़ीबी और सियासी मरकज़ की हैसियत से मारूफ़ होता था। क्योंकि किसी भी इलाक़े के अवाम हर पहलु से अपने मरकज़ी शहर में परवान चढ़ने वाले रुझानात की पैरवी करते हैं। यही क़ानून और असूल सूरतुल क़सस की आयत 59 में इस तरह बयान हुआ है: {وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا } "और आपका रब बस्तियों को हलाक करने वाला ना था जब तक कि वह उनकी मरकज़ी बड़ी बस्ती में कोई रसूल ना भेज देता।"

आयत 52

"तो (ऐ नबी ﷺ!) आप इन कुफ्फ़ार का कहना ना मानिए"

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ

यहाँ पर लफ्ज़ इताअत हुक्म की तामील के मफ़हूम में नहीं आया, बल्कि इस फिकरे का मफ़हूम समझने के लिये उन हालात के बारे में जानना ज़रूरी है जो इस सूरत के नुज़ूल के वक़्त हुज़ूर को मक्का में दरपेश थे। उस वक़्त मक्का की फिज़ा इन्तहाई कशीदा थी और हुज़ूर पर हर तरफ़ से शदीद दबाव था। इन हालात में अक्सर लोग आपको मशवरे देते थे और बार-बार समझाते थे कि आपने अपनी पूरी क़ौम के साथ जो लड़ाई मोल ले रखी है ये मुनासिब हिकमते अमली नहीं है। इससे क़बीले में फूट पड़ जाएगी, भाई-भाई से कट जाएगा, औलाद वालिदैन से जुदा हो जाएगी, क़बीले की बनी बनाई साख बर्बाद हो जाएगी और इसके नताइज सबके लिये बहुत भयानक होंगे। अगर आप अपने मौक़फ़ में थोड़ी सी लचक पैदा कर लें तो सुलह सफ़ाई की कोई सूरत निकल सकती है और हालात बेहतर हो सकते हैं। चुनाँचे कशमकश के इस माहौल में एक मरहला ऐसा भी आया जब वलीद बिन मुगीरा समेत क़ुरैश के अक्सर अकाबरीन चाहते थे कि आप की कुछ बातें तस्लीम कर ली जाएँ, इसके जवाब में आप भी अपने मौक़फ़ में कुछ लचक पैदा करें, इस तरह कोई दरमियानी राह निकल आए और तसादुम का खतरा टल जाए। लेकिन अहले मक्का की इस सोच और कोशिश के बावजूद आप अपने मौक़फ़ पर पूरी तंदही और दिल जमी से डटे हुए थे। इन हालात में

एक तरफ़ अहले ईमान पर अरसा-ए-हयात तंग हो रहा था तो दूसरी तरफ़ आप पर शदीद नौइयत का मआशरती दबाव था। इस सूरतेहाल की नज़ाकत और शिद्दत की एक झलक सूरह बनी इसराईल की इन आयात से भी महसूस की जा सकती है: {وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۡ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا } (आयत 73) {وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـــًٔا قَلِيْلًا} (आयत 74) "(ऐ नबी ﷺ!) ये लोग तो तुले हुए थे कि आपको फ़ितने में डाल कर इससे बिचला दें जो हमने आपकी तरफ़ वही की है ताकि आप कुछ अपनी तरफ़ से गढ़ कर हमारी तरफ़ मंसूब कर दें। अगर ऐसा होता तो ये लोग आपको अपना गाढ़ा दोस्त बना लेते। और अगर हमने आपको साबित क़दम ना रखा होता तो ऐन मुमकिन था कि आप इनकी तरफ़ कुछ ना कुछ माइल हो ही जाते।" इस स्याक़ व सबाक़ में आयत ज़ेरे नज़र के इन अल्फ़ाज़ का मफ़हूम ये है कि इनकी किसी बात को क़बूल करना तो दरकिनार आप इन लोगों की बातों की तरफ़ बिल्कुल ध्यान ही ना दें।

"और आप इनके साथ जिहाद करें इस (क़ुरान) के ज़रिये से बड़ा जिहाद।" وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ــ52

इन मुश्किल हालात में आपको क़ुरान के ज़रिये जिहाद करने का हुक्म दिया जा रहा है। चुनाँचे मक्के में बारह साल तक आपने जो जिहाद किया वह जिहाद बिस्सैफ़ नहीं था बल्कि जिहाद बिलक़ुरान था। इस जिहाद की आज फिर हमारे मआशरे शदीद ज़रूरत है। इस मौज़ू की तफ़सील के लिये मेरी किताब "जिहाद बिलक़ुरान और इसके पाँच महाज़" का मुताअला मुफ़ीद रहेगा, जो मेरी दो तक़ारीर पर मुश्तमिल है। बहरहाल आज हमें अपने क़ौमी और मुल्की मसाइल के हल के लिये क़ुरान की तलवार हाथ में लेकर जिहाद करने और क़ुरानी दावत, तरबियत, तज़किया, इन्ज़ार और तब्शीर के ज़रिये से इक़ामते दीन के लिये एक भरपूर इन्क़लाबी जद्दो-जहद बरपा करने की ज़रूरत है। हमारे इज्तमाई मसाइल का हल भी यही है और हमारे अंदरूनी अमराज़ की दवा {وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ} (सूरह युनुस 57) भी इसी में है।

आयत 53

"और वही है (अल्लाह) जिसने दो दरिया चला दिये" وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

"ये मीठा है निहायत खुश ज़ायक़ा और ये खारी है निहायत कड़वा।" هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ

उसकी क़ुदरत से नमकीन और खारे समुन्दर के अन्दर मीठे पानी की रू भी बह रही है।

"और इन दोनों के दरमियान उसने एक पर्दा और मज़बूत आड़ बना रखी है।" وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ــ53

ये पर्दा, आड़ या रोक नज़र आने वाली कोई चीज़ तो नहीं है, लेकिन ये अल्लाह तआला की सन्नाई का शाहकार है कि मीठा पानी कड़वे पानी के साथ समुन्दर के अन्दर दूर तक मिलने नहीं पाता।

आयत 54

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَاۗءِ بَشَرًا

"और वही है जिसने पानी से पैदा किया इंसान को"

पानी से यहाँ इंसान का माद्दा-ए-तौलीद भी मुराद हो सकता है और आम पानी भी, क्योंकि अल्लाह तआला ने हर जानदार चीज़ पानी से ही पैदा की है।

فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۭ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ــ54

"तो उसने बनाया उसके लिये नसब और सुसराली रिश्ता। और आपका रब सब क़ुदरतों का मालिक है।"

इंसान का नसब तो उसके वालिदैन से चलता है। इसके अलावा उसकी बीवी के हवाले से दूसरे ख़ानदान के साथ भी उसका रिश्ता और ताल्लुक़ जोड़ा जाता है। इस लिहाज़ से सास और ससुर को भी अल्लाह तआला ने वालिदैन जैसा तक़द्दुस और अहतराम अता किया है। सुसराली रिश्तेदारियाँ अगर ना होतीं तो क़बीलों और खानदानों का मआशरे में बाहमी अरतबात व इख्तिलात मुमकिन ना होता और हर ख़ानदान दूसरे ख़ानदान से अलग-थलग रहता। चुनाँचे अल्लाह तआला ने सुसराली रिश्तों का ताना-बाना इस तरह से बुन रखा है कि इससे नौए इंसानी बाहम मरबूत होती चली जाती है।

आयत 55

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۭ

"और वह बंदगी करते हैं अल्लाह के सिवा उनकी जो ना तो उन्हें कोई नफ़ा पहुँचा सकते हैं और ना नुक़सान।"

وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰي رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ــ55

"और ये काफ़िर लोग अपने रब की तरफ़ से पीठ मोड़े हुए हैं।"

ये लोग अपने रब की तरफ़ मुतवज्जा होते ही नहीं। ज़हीर का मायना मददगार भी है और अला मुखालफ़त के लिये आता है। इस तरह इन अल्फ़ाज़ का मफ़हूम होगा कि काफ़िर लोग अपने रब के ख़िलाफ़ दूसरों के मददगार बनते हैं।

आयत 56

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ــ56

"और नहीं भेजा हमने आप को मगर बशीर व नज़ीर बना कर।"

ताकि जो लोग हक़ का रास्ता इख़्तियार कर लें उन्हें अल्लाह की रहमतों और जन्नत की नेअमतों की बशारत दें: {فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ڏ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ} (वाक़िया 89) और जो लोग इन्कार पर मुसिर्र हैं उन्हें जहन्नम के अज़ाब से ख़बरदार करें।

आयत 57

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَاۗءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ـــ57

"आप इनसे कह दीजिये कि मैं तुमसे इस पर कुछ अज्र नहीं माँगता, सिवाय इसके कि जो चाहे अपने रब का रास्ता इख़्तियार करे।"

आप लोग देख रहें हैं कि मैं तुम्हें दावत देने और क़ुरान सुनाने में हमा वक़्त मसरूफ़ रहता हूँ, लेकिन मैंने इसके एवज़ तुम लोगों से कभी कोई उजरत नहीं माँगी, कभी किसी मुआवज़े का मुतालबा नहीं किया। तुम लोग मुझे शायर, काहिन और जादूगर होने का इल्ज़ाम तो धरते हो, मगर कभी ये नहीं सोचते कि शायर, काहिन, जादूगर वगैरह सब तो हर वक़्त मुआवज़े और ईनाम के लालच में रहते हैं, जबकि मैं तो महज़ इख्लास और तुम्हारी खैर ख्वाही की बुनियाद पर दावते दीन की ख़िदमत सरअंजाम दे रहा हूँ। इसमें मेरा अज्र या मुआवज़ा है तो सिर्फ़ इस क़दर कि तुम में से किसी को अपने रब के रास्ते पर आने की तौफ़ीक़ मिल जाए, और इसमें भी तुम्हारा ही फ़ायदा है ना कि मेरी कोई गर्ज़ या मनफ़अत!

आयत 58

وَتَوَكَّلْ عَلَي الْـحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ

"और आप तवक्कुल किये रखिए उस ज़िन्दा-ए-जावेद हस्ती पर जिसे कभी मौत नहीं आएगी, और उसकी हम्द के साथ तस्बीह कीजिये।"

وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَۨا ـــ58ڻ

"और वह अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिये काफ़ी है।"

काफ़िर लोग ये ना समझें कि इनके करतूतों को कोई देख नहीं रहा है। वह अल्लाह जो अल् हय्य और अलक़य्यूम है और अपने बन्दों के हाल पर हर आन नज़र रखे हुए है। इन लोगों की एक-एक हरकत और एक-एक बात जवाब देही के लिये उसके यहाँ रिकॉर्ड हो रही है। दूसरी तरफ़ अहले ईमान के नेक आमाल की भी एक-एक तफ़सील लिखी जा रही है ताकि उन्हें उनका भरपूर बदला दिया जा सके।

आयत 59

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰي عَلَي الْعَرْشِ ڔ

"वही कि जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके माबैन है छह दिनों में, फिर वह मुतमक्किन हो गया अर्श पर।"

"वह रहमान है! तो पूछ लो उसके बारे में किसी खबर रखने वाले से।"

اَلرَّحۡمٰنُ فَسۡـَٔلۡ بِهٖ خَبِيۡرًا ـــ59

अल्लाह तआला की सिफ़ात और शान के बारे में जानना चाहते हो तो किसी साहिबे इल्म से पूछो! जब कभी इंसान अपने मुताल्लिक़ सोचता है या इस कायनात की तख्लीक़ के बारे में गौर करता है तो उसे अहसास होता है कि कोई तो है जिसने उसे पैदा किया है, इस कायनात को पैदा किया है। चुनाँचे वह अपने खालिक़ के बारे में जानना चाहता है, उस तक रसाई चाहता है, उसे पाना चाहता है। ये सोच और तजस्सुस इंसान की फ़ितरत का तक़ाज़ा है। इंसानी फ़ितरत की इसी आवाज़ को किसी शायर ने अल्फ़ाज़ के क़ालिब में इस तरह ढाला है:

मुझको है तेरी जुस्तजू, मुझको तेरी तलाश है
खालिक़ मेरे कहाँ है तू? मुझको तेरी तलाश है!

इंसानी फ़ितरत की इसी जुस्तजू और इसी तलाश की रहनुमाई के लिये फ़रमाया गया है कि उसके बारे में ऐसे लोगों से पूछो जो उससे आशनाई रखते हों, उसे पाने के लिये ऐसे लोगों की सोहबत इख़्तियार करो जिनकी उसके साथ दोस्ती हो: { وَكُوۡنُوۡا مَعَ الصّٰدِقِيۡنَ} (तौबा 119) कि ऐसे लोगों की सोहबत से ही तुम्हें अल्लाह की माअरफ़त हासिल होगी।

आयत 60

"और जब उनसे कहा जाता है सज्दा करो रहमान को, तो वह कहते हैं कि रहमान कौन है?"

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمُ اسۡجُدُوۡا لِلرَّحۡمٰنِ قَالُوۡا وَمَا الرَّحۡمٰنُ

मुशरिकीने मक्का के लिये अल्लाह का लफ्ज़ तो मारूफ़ था मगर रहमान से वह वाक़िफ़ नहीं थे। चुनाँचे वह हुज़ूर पर ये ऐतराज़ भी करते थे कि अल्लाह के बजाय आप रहमान का नाम क्यों लेते हैं? ये नया नाम हमारे लिये क़ाबिले क़ुबूल नहीं है।

"क्या हम उसे सज्दा करें जिसके लिये तुम हमें हुक्म दे रहे हो?"

اَنَسۡجُدُ لِمَا تَاۡمُرُنَا

यानि हम आपके कहने पर उसे सज्दा क्यों करें? इसका मतलब तो ये होगा कि हमने आपकी बात तस्लीम कर ली और आप जीत गए। यही वह ज़िद है जिसे क़ुरान में "शिक़ाक़" कहा गया है। इस ज़िद और तास्सुब में वह लोग आपकी मब्नी बर हक़ीक़त बात भी मानने के लिये तैयार नहीं थे।

"और उसने बढ़ा दिया उन्हें नफ़रत में।"

وَزَادَهُمۡ نُفُوۡرًا ۝60

यानि इस तरह हक़ से इनकी नफ़रत मजीद बढ़ रही है और इनके जज़्बा-ए-फ़रार में भी मुसलसल इज़ाफ़ा हो रहा है।

.

आयात 61 से 77 तक

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ــ61 وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ــ62 وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ــ63 وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ــ64 وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ــ65گ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ــ66 وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ــ67 وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۙ ــ68 يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ــ69گ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ــ70 وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ــ71 وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ــ72 وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ــ73 وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ــ74 اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۙ ــ75 خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ــ76 قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۧ ــ77

अब इस सूरत का आख़री रुकूअ शुरू हो रहा है जो हमारे मुताअला-ए-क़ुरान हकीम के मुन्तखब निसाब का एक अहम दर्स (दर्स नंबर 11) भी है। मुन्तखब निसाब के हिस्से अव्वल में चार जामेअ अस्बाक़ हैं। उनमें से दूसरा दर्स आयतुल बिर्र (सूरतुल बक़रह की आयत 177) पर मुश्तमिल है, जिसका मुताअला हम कर चुके हैं। हिस्सा दौम में "मुबाहिसे ईमान" के उन्वान के तहत पाँच दुरूस हैं जिनमें से तीन मक़ामात (सूरतुल फ़ातिहा, सूरह आले इमरान के आख़री रुकूअ की आयात और सूरतुन्नूर की आयाते नूर यानि पाँचवाँ रुकूअ) का मुताअला हम इससे पहले कर चुके हैं। मुन्तखब निसाब का तीसरा हिस्सा "मुबाहिसे अमले सालेह" पर मुश्तमिल है और इस हिस्से का पहला दर्स सूरतुल मोमिनून की इब्तदाई आयात के हवाले से है, जिनका मुताअला हम कर चुके हैं। इन आयात में एक बंदा-ए-मोमिन की सीरत की तामीर के लिये बुनियादी असासात के बारे में रहनुमाई की गई है, जबकि सूरतुल फुरक़ान के आख़री रुकूअ की जिन आयात का मुताअला अब हम करने चले हैं (मुन्तखब निसाब के तीसरे हिस्से का दूसरा दर्स इन आयात के हवाले से है) इनमे बंदा-ए-मोमिन की तामीरशुदा (mature) शख्सियत व सीरत के खसाएस और खद्दो-ख़ाल के बारे में बताया गया है।

लेकिन इस मौज़ू को शुरू करने से पहले रुकूअ की इब्तदाई दो आयात में ईमान के बारे में क़ुरान हकीम के फ़ितरी इस्तदलाल का खुलासा बयान हुआ है:

आयात 61

تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ــ61

"बहुत बा-बरकत है वह ज़ात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें रख दिया एक चिराग और एक रौशन चाँद।"

यहाँ सूरज के लिये "सिराज" यानि चिराग का लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है और चाँद को रौशन बताया गया है। इस सिलसिले में अब तक यह हक़ीक़त इंसान के इल्म में आ चुकी है कि सूरज के अन्दर जलने या तहरीक़ (combustion) का अमल जारी है, जिसकी वजह से वह रौशनी के साथ-साथ हरारत का मिम्बा भी है, जबकि चाँद महज़ सूरज की रौशनी के इंअताफ़ (reflection) की वजह से रौशन नज़र आता है और उसमें किसी क़िस्म का अमले तहरीक़ नहीं पाया जाता। उसकी सतह हमारी ज़मीन की सतह से मिलती-जुलती है। अब तो इंसान खुद चाँद की सतह का अमली तौर पर मुशाहिदा भी कर चुका है।

आयत 62

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيلَ وَالنَّهَارَ خِلفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا
ــ62

"और वही है जिसने दिन और रात को बना दिया है एक-दूसरे के पीछे आने वाला, उसके लिये जो नसीहत हासिल करना चाहे या शुक्र गुज़ार बनना चाहे।"

दिन, रात और इनका उलट-फ़ेर आयाते इलाहिया में से हैं और आयाते इलाहिया पर गौर करने से इंसान को अल्लाह की ज़ात, उसके इल्म और उसकी क़ुदरत व हिकमत की मअरफ़त हासिल होती है। फ़िर जब इंसान अल्लाह की नेअमतों पर उसका शुक्र अदा करता है तो उसे कायनात का ज़र्रा-ज़र्रा अल्लाह की तौहीद, उसकी सन्नाई और उसकी क़ुदरत पर दलालत करता हुआ महसूस होता है।

ईमान के ज़िमन में ये दो आयात गोया उस मज़मून की तम्हीद है जिसमें "इबादुर्रहमान" यानि अल्लाह के महबूब और चहेते बन्दों की सीरत का नक्शा खींचा गया है। इन आयात का मुताअला करते हुए हर बंदा-ए-मुसलमान को अपने दिल में एक ख्वाहिश और उमंग ज़रूर पैदा करनी चाहिये कि अल्लाह तआला उसे भी अपने उन ख़ास बन्दों में शामिल होने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। और फ़िर उसे उन बन्दों की सफ़ में शामिल होने के लिये अमली तौर पर कोशिश भी करनी चाहिये।

आयत 63

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَي الْاَرْضِ هَوْنًا

"और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी और नरमी के साथ चलते हैं"

वह अपने आप को आक़ा और मालिक नहीं बल्कि अल्लाह के बन्दे और गुलाम समझते हैं। वह चलते भी गुलामों ही की तरह हैं। उनकी चाल में अकड़ की बजाय आजिज़ी और फ़रोतनी होती है।

وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ــ63

"और जब उनसे मुखातिब होते हैं जाहिल लोग तो वह उनको सलाम कह देते हैं।"

अरबी में जाहिल का मायना अनपढ़ या बे-इल्म आदमी नहीं, बल्कि इससे मुराद उजड और मुश्तअल मिज़ाज शख्स है जो जहालत पर उतर आए और किसी शरीफ़ आदमी से बदतमीज़ी का बर्ताव करे।

"इबादुर्रहमान" की दूसरी सिफ्त ये बयान की गई है कि जब वह देखते हैं कि जाहिल और उजड क़िस्म के लोग उनकी बात को समझने और उससे असर लेने की बजाय पंजाबी मुहावरे के मुताबिक़ उनसे महज़ सींग फ़साना चाहते हैं यानि उन्हें ख्वाह-म-ख्वाह बहस व मुबाहिसे में उलझाना चाहते हैं तो उन्हें सलाम करके वह अपनी राह लेते हैं। क्योंकि ऐसी गुफ़्तुगु या बहस से वक़्त के ज़ाया के अलावा कुछ हासिल होने की तवक़्क़ो नहीं होती। चुनाँचे एक समझदार और माक़ूल आदमी को चाहिये कि वह मुनासिब अंदाज़ में दूसरे को अपनी बात समझाने की कोशिश करे, लेकिन जब उसे महसूस हो कि उसका मुखातिब जान बूझ कर बात को समझना नहीं चाहता

और ख्वाह-म-ख्वाह की बहस में उलझना चाहता है तो वह किसी क़िस्म की बदमज़गी पैदा किये बगैर खुद को ऐसी सूरतेहाल से अलग कर ले।

आयात 64

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ــ64

"और वह लोग रातें बसर करते हैं अपने रब के हुज़ूर सजदे और क़याम करते हुए।"

जहाँ तक पाँच नमाज़ों का ताल्लुक़ है वह तो फ़राइज़ में शामिल हैं। इन नमाज़ों की पाबंदी बंदा-ए-मोमिन की सीरत की बुनियाद है। चुनाँचे सूरतुल मोमिनून (आयात 9) के आग़ाज़ में जब बंदा-ए-मोमिन के किरदार की असासात पर बात हुई तो वहाँ नमाज़े पंचगाना की मुहाफ़ज़त का ज़िक्र हुआ: {وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰي صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ}। लेकिन यहाँ चूँकि अल्लाह के उन ख़ुसूसी बंदों का ज़िक्र हो रहा है जिन्हें अल्लाह से दोस्ती का शर्फ़ और उसका क़ुर्ब नसीब हो चूका है, इसलिये यहाँ जिस नमाज़ का ज़िक्र हुआ है वह नमाज़ भी ख़ुसूसी है यानि नमाज़ तहज्जुद। चुनाँचे अल्लाह के ये नेक बन्दे अपने रब के हुज़ूर रातों की तन्हाइयों में उस वक़्त हाज़िर होते हैं जब दूसरे लोग सो रहे होते हैं और यूँ वह अपनी रातें उसके सामने इस तरह गुज़ार देते हैं कि कभी हालत-ए-क़याम में हैं और कभी सर-ब-सुजूद हैं।

आयत 65

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ــ65ک

"और (इसके बावजूद) वह लोग दुआ करते रहते हैं कि ऐ हमारे रब! अज़ाबे जहन्नम को हमसे फ़ेर दे, यक़ीनन उसका अज़ाब चिमट जाने वाली शय है।"

सूरतुन्नूर में भी अल्लाह तआला ने अपने मुक़र्रिब बन्दों की ऐसी ही कैफ़ियत बयान फरमाई है: { يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ } (आयत 37) "वह डरते रहते हैं उस दिन (के ख्याल) से जिसमें दिल और निगाहें उलट दिये जायेंगे।" यानि अगरचे वह अपनी हर मसरूफियत पर अल्लाह के ज़िक्र को तरजीह देते हैं और हर हालत में नमाज़ क़ायम करते हैं, मगर इस सब कुछ के बावजूद भी वह अहतसाबे आखिरत के खौफ़ से लरज़ाँ व तरसाँ रहते हैं।

आयत 66

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ــ66

"यक़ीनन वह बहुत बुरी जगह है मुस्तक़िल ठिकाने के लिये भी और आरज़ी क़याम के लिये भी।"

दुनिया में आमतौर पर इंसानी तबियत का ख़ास्सा है कि वह हरदम तब्दीली चाहता है। तब्दीली के तौर पर वह थोड़ी देर के लिये बुरी से बुरी जगह पर भी तफ़रीह महसूस करता है और अगर उसे अच्छी से अच्छी जगह पर भी मुस्तक़िल रहना पड़े तो वहाँ उसे बहुत जल्द उकताहट महसूस होने लगती है। इसके बरअक्स जन्नत और जहन्नम की कैफ़ियत यकसर मुख्तलिफ़

है। क़ुरान के मुताबिक़ जन्नत ऐसी पुरकशिश जगह है कि वहाँ मुस्तक़िल रहने के बावजूद अहले जन्नत को उसकी दिलचस्पियों और रअनाइयों में ज़र्रा भर कमी महसूस नहीं होगी और जहन्नम में अगर कोई इंसान एक लम्हे के लिये भी चला गया तो वह अपनी सारी सख्तियाँ उस पर उसी एक लम्हे में ज़ाहिर कर देगी।

आयात 67

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ــ67

"और वह लोग कि जब वह खर्च करते हैं तो न इसराफ़ करते हैं और न बुख्ल से काम लेते हैं बल्कि (उनका मामला) इसके बैन-बैन मौअतदल होता है।"

अगरचे किसी भी मामले में ऐतदाल क़ायम रखना दुनिया का मुश्किल तरीन काम है मगर अल्लाह के इन बन्दों की सीरत ऐसी पुख्ता (mature) होती है कि इन्हें अपने अखराजात के अन्दर ऐतदाल और तवाज़ुन क़ायम रखने में मुश्किल पेश नहीं आती।

आयत 68

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ

"और वह लोग जो नहीं पुकारते अल्लाह के साथ किसी और मअबूद को"

وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ

"और न ही क़त्ल करते हैं किसी जान को जिसको अल्लाह ने मोहतरम ठहराया है मगर हक़ के साथ, और ना ही कभी वह ज़िना करते हैं"

हक़ से मुराद यहाँ वह क़ानूनी सूरतें हैं जिन सूरतों में किसी इंसान की जान ली जा सकती है, यानि क़त्ल के बदले क़त्ल, मुरतद का क़त्ल, हरबी काफ़िर का क़त्ल और शादीशुदा ज़ानी का रज्म।

इस आयत में तीन कबीरा गुनाहों का ज़िक्र हुआ है: शिर्क, क़त्ले नाहक़ और ज़िना। शिर्क के बारे में तो अल्लाह तआला ने क़ुरान में दो दफ़ा फ़रमा दिया कि मुशरिक को हरगिज़ माफ़ नहीं किया जाएगा। और क़त्ल ऐसा भयानक गुनाह और जुर्म है जिससे तमद्दुन की जड़ कटती है, जबकि ज़िना से मआशरा गन्दगी का ढेर बन जाता है। अल्लाह तआला ने सूरतुन्निसा में ऐसे कबीरा गुनाहों से बचने वालों के लिये छोटे गुनाहों से माफ़ी की खुशख़बरी सुनाई है: {اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا} (आयत 31) "अगर तुम लोग बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारे छोटे गुनाह बख्श देंगे और तुम्हें इज्ज़त वाली जगह दाख़िल करेंगे।"

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۙ ــ68

"और जो कोई भी ये काम करेगा वह इसकी सज़ा को हासिल करके रहेगा।"

आयत 69

"क़यामत के दिन उसका अज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा और वह उसमें रहेगा हमेशा-हमेश ज़लील होकर।"

يُضٰعَفۡ لَهُ الۡعَذَابُ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ وَيَخۡلُدۡ فِيۡهٖ مُهَانًا ــ69ک

ये आयत इस ऐतबार से बहुत अहम है कि इससे क़यामत के दिन से पहले का अज़ाब साबित होता है, यानि जो अज़ाब इस शख्स को इससे पहले दिया जा रहा होगा क़यामत के दिन उस अज़ाब को दोगुना कर दिया जाएगा। मुनकरीने हदीस अज़ाबे क़ब्र को नहीं मानते। उनका इसरार है कि कुरान मजीद में अज़ाबे क़ब्र का सबूत नहीं मिलता। अगरचे कुरान में सराहतन अज़ाबे क़ब्र का ज़िक्र नहीं है, लेकिन बाज़ आयात से वाज़ेह तौर पर बरज़खी ज़िंदगी का अज़ाब साबित होता है। आयते ज़ेरे मुताअला से भी वाज़ेह होता है कि क़यामत के दिन से पहले मुजरिमीन अज़ाब झेल रहे होंगे और यक़ीनन इस अज़ाब से अज़ाबे क़ब्र या अज़ाबे बरज़ख़ ही मुराद है। बहरहाल अहादीस में अज़ाबे क़ब्र के बारे में बहुत तफ़सीलात मिलती हैं। हुज़ूर का फ़रमान है कि क़ब्र जहन्नम के गड्ढों में से एक गड्ढा है या जन्नत के बगीचों में से एक बगीचा है। और ये कि क़ब्र में या तो जन्नत की एक खिड़की खोल दी जाती है जहाँ से ठन्डी हवा और ख़ुशबू आती है, या फ़िर दोज़ख़ की खिड़की खोल दी जाती है जिससे आग की लपट और लू आती है।

आयत 70

إِلَّا مَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا

"सिवाय उसके जिसने तौबा की और ईमान लाया और उसने नेक अमल किये"

गोया जो शख्स इस तरह के कबीरा गुनाहों में मुलव्विस होता है अगरचे क़ानूनन उसका शुमार काफ़िरों में नहीं होता मगर हक़ीक़ी ईमान उसके दिल से निकल जाता है। इसलिये यहाँ तौबा के बाद ईमान की शर्त भी रखी गई है। चुनाँचे ऐसे शख्स की तौबा दरअसल अज़सर नौ ईमान लाने के मुतरादिफ़ है। बहरहाल अगर उसने मौत के आसार नज़र आने से पहले-पहले {مَالَمْ يُغَرْغِرْ} तौबा कर ली तो उसको अज़ाब से इस्तशना मिल सकता है।

فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمۡ حَسَنٰتٍ ؕ

"तो ऐसे लोगों की बुराईयों को अल्लाह तआला नेकियों से बदल देता है।"

इसके दो मायने हैं। एक तो ये कि नामा-ए-आमाल में जो बुराईयों का अन्दराज था वह साफ़ कर दिया जाएगा और उसकी जगह नेकियों का अन्दराज हो जाएगा। और दूसरा ये कि तौबा करने से इंसान के दामने अख्लाक़ के धब्बे धुल जाते हैं और उसका दामन साफ़ शफ्फ़ाफ़ हो जाता है।

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا ــ70

"और अल्लाह गफ़ूर है, रहीम है।"

आयत 71

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللهِ مَتَابًا ــ71

"और जिसने तौबा की और नेक आमाल किये तो ऐसा शख्स तौबा करता है अल्लाह की जनाब में जैसा कि तौबा करने का हक़।"

यानि तौबा के बाद गुनाहों से किनाराकश हो गया और तक़वा की रविश इख़्तियार कर ली तो यही असल तौबा है। इसके बरअक्स अगर एक शख्स ज़बान से तौबा-तौबा के अल्फ़ाज़ अदा करता रहे और अस्तगफ़ार की तस्बिहात पढता रहे, सवा लाख मर्तबा आयते करीमा पढ़वा कर ख़त्म भी दिलाए मगर उसकी हरामखोरी ज्यों की त्यों रहे और वह गुनाहों से बाज़ ना आए तो उसकी तौबा की कोई हैसियत नहीं है।

आयत 72

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ ۙ

"और वह लोग जो झूठ पर मौजूद नहीं रहते"

ये सिर्फ़ झूठ की गवाही से बचने की बात नहीं बल्कि इससे ऐसी बुलंदतर कैफ़ियत का ज़िक्र है जिसके अन्दर झूठी गवाही से बचने का मफ़हूम ज़िमनी तौर पर खुद-ब-खुद आ जाता है। यानि अल्लाह के ये नेक बन्दे हक़ व सदाक़त की गैरत व हमियत में इस क़दर पुख्ता होते हैं कि किसी ऐसी जगह पर वह अपनी मौजूदगी भी गवारा नहीं करते जहाँ झूठ बोला जा रहा हो या झूठ पर मब्नी कोई धंधा हो रहा हो।

وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ــ72

"और जब वह किसी लग्व काम पर से गुज़रते हैं तो बा-वक़ार अंदाज़ से गुज़र जाते हैं।"

अगर इन लोगों का कहीं इत्तेफ़ाक़ से किसी खेल-तमाशे और लग्व काम पर से गुज़र हो तो वह उससे अपना दामन बचा कर बेनियाज़ी से गुज़र जाते हैं। यही मज़मून सूरह मोमिनून में इस तरह से आया है: {وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ} (आयत 3) कि मोमिनीन हर क़िस्म की लग्वियात से ऐराज़ करते हैं।

आयत 73

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ــ73

"और वह लोग कि जब उन्हें उनके रब की आयात के ज़रिये नसीहत की जाती है तो वह उस पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिर पड़ते।"

इसका एक मफ़हूम तो ये है कि ऐसे लोग जब क़ुरानी आयात को पढ़ते या सुनते हैं तो उनका रवैय्या अंधों या बहरों जैसा नहीं होता, बल्कि वह उन पर ग़ौर व फ़िक्र और तदब्बुर करते हैं। और दूसरा मफ़हूम ये है कि क़ुरैशे मक्का की तरह अंधे और बहरे बन कर अल्लाह की आयात की मुखालफ़त पर कमर नहीं कस लेते। इस मफ़हूम में इस आयत का अंदाज़ तंज़ ये होगा कि जो रवैय्या मुशरिकीने मक्का ने कलामुल्लाह के साथ अपना रखा है,

अल्लाह के नेक बन्दों का ऐसा रवैय्या नहीं होता। सूरह मोहम्मद में कुफ्फ़ार के इस रवैय्ये का ज़िक्र इस तरह किया गया है: {اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰي قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا} (आयत 24) "क्या ये लोग क़ुरान में तदब्बुर नहीं करते या इनके दिलों पर कुफ़ल (ताले) पड़ गए हैं?" बरहाल "इबादुर्रहमान" के मक़ाम व मर्तबे से ये बात फ़रोतर (inferior) है कि वह क़ुरान को अंधे और बहरे होकर मानें या पढ़ें।

आयत 74

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ

"और वह लोग कि जो कहते हैं: ऐ हमारे परवरदिगार! हमें हमारी बीवियों और औलाद की तरफ़ से आँखों की ठंडक अता फ़रमा"

यानि जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं, हमारे अहलो-अयाल को भी इसी रास्ते पर चलने वाला बना दे ताकि उनकी तरफ़ से हमारी आँखें ठन्डी हों, क्योंकि अल्लाह के इन नेक बन्दों की आँखों की ठंडक तो इसी में होगी कि उनके घर वाले भी अल्लाह के फ़रमाँ बरदार बन्दे बनें और अल्लाह की बंदगी के रास्ते को इख़्तियार करें। इसके बरअक्स अगर घर का सरबराह अल्लाह के दीन पर चलने वाला हो और उसके अहलो-अयाल की तरजीहात कुछ और हों तो घर के अन्दर कशीदगी और कशमकश का माहौल पैदा हो जाएगा जो उनमें से किसी के लिये भी बाइसे सुकून नहीं होगा।

وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ــ74

"और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना!"

इसका ये मतलब नहीं कि "इबादुर्रहमान" इमामत और पेशवाई के लिये बेक़रार हैं बल्कि इस दुआ को इस हवाले से समझना चाहिये कि मर्द घर का सरबराह होता है और उसके बीवी-बच्चे उसके ताबेअ और पेरोकार होते हैं। चुनाँचे घर के सरबराह की दुआ और ख्वाहिश होनी चाहिये कि अल्लाह तआला उसके अहलो-अयाल को भी मुत्तक़ी बना दे। इस इमामत का एक और पहलु भी है और वह ये कि मैदाने हश्र में हर इंसान के अहलो-अयाल और उसकी नस्ल के लोग उसके पीछे-पीछे चल रहे होंगे। इबादुर्रहमान की ये दुआ इस लिहाज़ से भी बर महल है कि ऐ अल्लाह! मैदाने हश्र में हम जिन लोगों के सरबराह या लीडर बनें उनको भी नेक और परहेज़गार बना दे, ताकि वह लोग भी हमारे साथ जन्नत में दाखिल होकर हमारी ख़ुशी और इत्मिनान का बाइस बनें। ऐसा ना हो कि हमारे पीछे आने वली नस्लों के लोग जहन्नम के मुस्तहिक़ ठहरें। हुज़ूर ﷺ का फ़रमान है: ((كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ))[17] कि तुम में से हर शख्स की हैसियत एक चरवाहे की सी है और तुम में से हर कोई अपनी रय्यत के बारे में जवाबदेह होगा। इस लिहाज़ से हर आदमी के अहलो-अयाल उसकी रय्यत हैं और अपनी इस रय्यत के बारे में वह मसऊल होगा। चुनाँचे उनकी हिदायत के लिए उसे कोशिश भी करनी चाहिये और दुआ भी।

आयत 75

"ये वह लोग हैं जिनको उनके सब्र की जज़ा में बालाखाने मिलेंगे"

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا

अल्लाह तआला दुनिया में बन्दों को आज़माता रहता है। एक नेक इंसान की ज़िंदगी में ऐसे बेशुमार मौक़े आते हैं जब उसके सामने गुनाह और अल्लाह की नाफ़रमानी का रास्ता खुला होता है। ये रास्ता बेहद पुरकशिश भी है और आसान भी। दूसरी तरफ़ नेकी और अल्लाह की फ़रमाबरदारी के रास्ते पर इस्तक़ामत के साथ चलने के लिये क़दम-क़दम पर इन्सान को सब्र करना पड़ता है और शहवाते नफ्सानी को क़ाबू में रखना पड़ता है। इस लिहाज़ से एक बंदा-ए-मोमिन की पूरी ज़िंदगी ही सब्र से इबारत है। चुनाँचे उसके इस सब्र का बदला उसे आख़िरत में जन्नत और उसकी नेअमतों की सूरत में दिया जाएगा।

"और उनमें उनका इस्तक़बाल किया जाएगा दुआओं और सलाम के साथ।"

وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ـــ75

आयत 76

"वह उसमें हमेशा रहेंगे। वह बहुत ही उम्दा जगह है मुस्तक़िल क़याम के लिये भी और थोड़ी देर ठहरने के लिये भी।"

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ـــ76

ये गोया उन अलफ़ाज़ का तक़ाबुल (contrast) है जो आयत 66 में वारिद हुए: {سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا }।

आयत 77

"(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि मेरे रब को तुम्हारी कोई परवाह नहीं, अगर ना होता तुम्हें पुकारना।"

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ـــ77

बनी नौए इंसान को राहे हिदायत दिखाने और इस सिलसिले में उन पर इत्मामे हुज्जत करने का काम अल्लाह तआला ने खुद अपने ज़िम्मे ले रखा है। इस क़ानून की वज़ाहत सूरह बनी इसराईल में अल्लाह तआला ने इन अल्फाज़ में फरमाई है: {وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا} (आयत 15) कि हम किसी क़ौम पर उस वक़्त तक अज़ाब नहीं भेजते जब तक कि उनके दरमियान रसूल मबऊस ना कर दें। इसी हवाले से यहाँ हुज़ूर ﷺ से कहलवाया जा रहा है कि तुम लोगों को हिदायत की तरफ़ बुलाना और हक़ की दावत देना मशीयते इलाही के तहत ज़रूरी ना होता तो मेरे रब को तुम लोगों की कुछ भी परवाह नहीं थी। अल्लाह तआला ने इसी ज़रूरत और क़ानून के तहत तुम्हारी तरफ़ मबऊस फ़रमा कर मुझे ये ज़िम्मेदारी सौंपी है कि मैं उसका पैग़ाम तुम लोगों तक पहुँचाऊँ। इसके लिये मैं सालहा साल से तुम्हारे पीछे खुद को हल्कान कर रहा हूँ। गलियों और बाज़ारों में तुम्हारे पीछे-पीछे फिरता हूँ, तुम्हारे घरों में जाकर तुम लोगों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाता हूँ। ख़ुफ़िया और ऐलानिया हर तरह से तुम लोगों को समझाता हूँ। तुम लोग इससे कहीं

ये ना समझ बैठो कि इसमें मेरी कोई ज़ाती गर्ज़ है या तुम्हारे बगैर मेरे रब का कोई काम अधूरा पड़ा है। बल्कि हक़ीक़त तो ये है कि मेरे रब के हुज़ूर तुम्हारी हैसियत परेकाह के बराबर भी नहीं। अगर अल्लाह को तुम्हें राहे हिदायत दिखा कर इत्मामे हुज्जत करना मंज़ूर ना होता, और इसके लिये मेरा तुम्हें मुखातिब करना नागुज़ीर ना होता तो मैं हरगिज़ तुम्हारे पीछे-पीछे ना फिरता।

فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝77

"अब जबकि तुमने झुठला दिया है तो अनक़रीब ये (अज़ाब तुम्हें) चिमट कर रहेगा।"

यानि तुम्हारे इस इन्कार की पादाश में तुम लोगों को सज़ा मिल कर रहेगी।

بارک اللہ لی و لکم فی القرآن العظیم و نفعنی و ایا کم بالآیات والذکر الحکیم۔